द्वितीय अध्याय

आधुनिकता– अर्थ, स्वरुप एवं व्याप्ति

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

आधुनिकता : अर्थ एवं स्वरूप --

जब युरोपीय शक्तियाँ हिन्दुस्तान में आयी तब तक पश्चिम में आधुनिक युग की शुरुआत हो चुकी थी। मध्यकाल की छायाएँ अतीत में सिमटने लगी थी। इसी कारणवश आदमी और समाज नये ढंग से परिभाषित होने लगे। आधुनिक समाज का निर्माण होने लगा। इस के साथ ही आधुनिक या आधुनिकता की कई परिभाषाएँ की जाने लगी। कभी आधुनिकता को नगरीकरण (Urbanization) के साथ तो कभी औद्योगीकरण के साथ तालमेल बिठाया जाता रहा। एक और दृष्टि भारत जैसे देशों के पाश्चात्यीकरण (Westernization) को आधुनिकता मान लेती है।

`आधुनिक` शब्द एक ऐसा शब्द है जिसके अनेक और परस्पर विरोधी किस्म के अर्थ ग्रहण किये जाते है। `आधुनिक` का प्रयोग समकालीन के पर्याय के रूप में भी होता है। हिन्दी में भारतेन्दु युग भी आधुनिक है, छायावाद युग और नई कविता भी। पाश्चात्य लेखक आधुनिकता को १५ वी शती तक पीछे खींच कर ले जाते है।

अस्तित्ववादियों के लिए असंभव और अकेलापन आधुनिकता है ।

फ्रायडवादियों के लिए कुंठा और दमित कामवृत्ति या अचेतन, उपचेतन के स्वप्न रहस्य आधुनिकता है । अनेक लोगों के अनुसार आधुनिक वह है जो परम्परा से हटा हुआ हो, चौंका देनेवाला हो । कुछ विद्वान आधुनिकता को समकालीनता के पर्याय के रूप में ग्रहण करते हैं । परंतु हर समसामयिक या वर्तमानकालीन चीज आधुनिक नहीं होती ।

नन्द चतुर्वेदी कहते हैं, ` यह मानने में संकोच नहीं किया जाना चाहिये कि आज भारत में हम जिस आधुनिक बोध की बात करते हैं, और जिसकी जडें हम सप्रयास अपनी चिंतन परम्परा में खोज लेते हैं, वह है मूलत: पश्चिमी अवधारणा । पश्चिम में औद्योगिकरण और तज्जन्य स्थितियों ने मानव को एक विषाम स्थिति में ला खडा किया तन्त्र कौशल बढ़ते बढ़ते इतना विराट हो उठा कि मानव उसके आगे निरीह और अकिंचन हो गया । विज्ञान उसके लिए अपरिहार्य हुआ तो आंतककारी भी बना । और इसी के बीच से उभरा आधुनिकता बोध । .... आधुनिकता दर असल एक किस्म की जागरूकता है और आस्था है जो विषाक्तता, भाग्यहीनता, गुलामी और पराजय, बीमारी और मृत्यु के साथ संघर्ष करती हुई एक समतावादी व्यवस्था की स्थापना के लिए प्रतिबध्द होती है ।[1] ` यह सही है कि पश्चिमी आधुनिकता का अधिक प्रभाव भारत में आधुनिकता के फलने फूलने में रहा है , परंतु यहाँ के आधुनिकता के आयाम का भी योगदान उतना ही रहा है। पश्चिमी आधुनिकता के जीवन मूल्यों की अधिकता हमारे देश के जीवन मूल्यों में भरपूर रही है । किंतु हू-ब-हू नकल आधुनिकता नहीं कही जायेगी ।

आधुनिकता : अर्थ ---

` आधुनिकता ` अंग्रेजी की ` Modernity[2] ` का समानधर्मी हिन्दी शब्द है ।

---

१ ` मधुमती ` - मार्च १९८५ (पत्रिका) - नन्द चतुर्वेदी - पृ.६८ ।

२ ` अंगरेजी - हिन्दी कोश ` - फादर कामिल बुल्के - पृ.४०८ ।

`आधुनिक ` का अर्थ ` वर्तमान की विशेषताओं से प्रभावित ( Modern ); आजकल का, वर्तमान काल का ( New recent ) तो ` आधुनिकता ` का अर्थ ` वर्तमान काल की विशेषताओं से युक्त होने का भाव (Modernity) ` ` आधुनिक होने का भाव ` बताया गया है।[१]

उपर्युक्त कोशों के अनुसार ` आधुनिकता ` का ऊपरी अर्थ लक्षित होते हुए भी ` आधुनिकता ` एक विवादास्पद पारिभाषिक शब्द रहा है। इसलिए ` आधुनिकता ` की विभिन्न परिभाषाएँ तथा मत देखना क्रमप्राप्त है।

आधुनिकता : परिभाषा --

साहित्य में आधुनिकता की संकल्पना एक विवादास्पद संकल्पना के रूप में रही है। आधुनिकता को समझने-समझाने के लिए अनेक विद्वानों ने परिभाषाएँ दी हैं।

(१) घनजंय वर्मा --

` आधुनिकता, धारणा और प्रत्यय से अधिक व्यक्ति की वृत्ति और बोध से ही सीधे सम्बध्द है। .... आधुनिकता काल सापेक्ष है और व्यक्ति के एटीटयूड, टेम्परामेन्ट और उसके समूचे अंत र्बाह्य व्यक्तित्व से जुड़ा है। `[२]

घनजंय वर्मा किसी एक तत्व को महत्व न देते हुए सभी तत्वों की अनिवार्यता आधुनिकता के लिए मानते हैं।

(२) रमेश कुंतल मेघ --

" एक समग्र आधुनिकता तो सामाजिक व्यवस्था का दर्पण, संस्कृति का

---

१ ` हिन्दी - कन्नड-अंग्रेजी : त्रिभाषा कोश (जिल्द १) - केन्द्रीय हिंदी निदेशालय - पृ.१७३ ।

२ आस्वाद के धरातल - घनजंय वर्मा - पृ.३५ । ४४ ।

मूल्य चक्र विभिन्न समूहों की चिंतन पध्दति तथा विभिन्न मनुष्यों की वृत्तियों का अमूर्त पॅटर्न है ।`[1]

मेघ जी ने आधुनिकता का संबंध संस्कृति ,इतिहास और विचार से जोडा । इनके अनुसार हमारी समाज व्यवस्था, संस्कृति, चिंतन पध्दति, वृत्ति सब एक होकर, एक दूसरों को परिवर्तित करते चलते हैं और इस परिवर्तित होने की प्रक्रिया में जो अमूर्त पॅटर्न बनता है वह आधुनिकता है ।

(३) डॉ.नगेन्द्र --

" आधुनिकता का सम्बन्ध वर्तमान से है, और चूंकि वर्तमान की धारणा समय सापेक्ष है, अत: आधुनिकता का यह रुप प्रत्येक युग में बदलता रहता है। आगे डॉ.नगेन्द्र के मतानुसार विचारपरक अर्थ में आधुनिकता के आधारभूत तत्व है । प्रथम " अपने देशकाल के साथ जीवंत एवं सचेतन सम्बन्ध " और द्वितीय तत्व - " विवेक युक्त वैज्ञानिक दृष्टिकोण " ।[2]

इस आधारपर आधुनिकता वर्तमान से संबध्द वह बोध है जो पिछले युग के जीवनबोध से भिन्न है। इस प्रकार` वर्तमान के प्रति सजगता ` को आधुनिकता की अनिवार्य शर्त माना जा सकता है ।

(४) हरिशंकर ऊधा --

" आधुनिकता के साथ एक विचार समूह संलग्न है । यद्यपि विज्ञान - आधुनिकता नहीं है, लेकिन विज्ञान आधुनिकता का अवसर अवश्य सिध्द हुआ[3]।"

---

१ ` आधुनिकता और आधुनिकीकरण - डॉ. मेघ - पृ.३३१ ।

२ ` नयी समीक्षा : नये सन्दर्भ ` - डॉ.नगेन्द्र - पृ.६२ ।

३ ` ज्ञानोदय ` - सं.- नेमीचंद जैन - (फरवरी १९६८ -)- पृ.७५ ।

हरिशंकर उप्रा जी की परिभाषा में बाह्य वस्तु या परिवेश को महत्व दिया गया है । इन्होंने 'मानसिकता' का विचार जरूर किया है लेकिन जोर 'परिवेश' पर ही दिया गया है ।

(५) विपिन कुमार अग्रवाल --

'आधुनिकता का एक पहलू यह है जो बीते हुये से शेयर करता है, और दूसरा वह जो उसकी अपनी देन है, उसका अपना विशेष गुण ।"[१]

अग्रवाल जी का कहना है कि कोई भी चीज बिल्कुल नयी नहीं होती क्योंकि उसका निर्माण हम पूर्वपरिचित के आधारपर ही करते हैं । नये का जो एक भाग पहली बार बना है और यही उसका असली गुण है बाकी वह पिछले निर्माणों से शेयर करता है । इस परिभाषा में परम्परा आधुनिकता में सहायक मानी गयी है ।

(६) डॉ.उर्मिला मिश्र --

"आधुनिकता एक बौद्धिक प्रक्रिया होने के साथ-साथ एक अन्वेषण भी है । .... आधुनिक शब्द एक शोधपूर्ण बौद्धिक प्रक्रिया है तो आधुनिकता विभिन्न प्रभावों से उत्पन्न एक चेतना है जिसको निरंतरता के अन्तर्गत रखा जा सकता है ।"[२]

डॉ. मिश्र जी के कथन का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक युग का समाज अपने समय की आधुनिक स्थिति एवं प्रवृत्ति से लड़ता रहा है । इसी कारण पूर्व - निर्धारित उद्देश्य की अपेक्षा आज के अपने क्षण के यथार्थ का बोध ही आधुनिकता का प्रमुख लक्षण है । आधुनिकता में ठहराव एवं स्थिरता के स्थान पर निरंतर बदलाव ही अपेक्षित है ।

---

१ 'आधुनिकता के पहलू' - वि.कु.अग्रवाल - पृ.१७ ।

२ 'आधुनिकता और मोहन राकेश' - डॉ.उर्मिला मिश्र - पृ.१,२ ।

(७) डॉ.रामगोपाल शर्मा `दिनेश` -- के अनुसार

"वस्तुत: आधुनिकता युग की जीवंत संस्कृति का पर्याय है। मनुष्य के दैनंदिन जीवन से इसका गहरा सम्बन्ध है।"[१]

इनके कथन का आशय यह रहा है कि आधुनिकता को समझने के लिए मनुष्य को उस संस्कृति को समझना आवश्यक है, जो उसके रोजमर्रा के जीवन व्यवहार एवं अनुभवों से जुड़ी है।

(८) डॉ.भगवतीप्रसाद शुक्ल --

"आधुनिकता स्वयं कोई मूल्य नहीं है वह तो एक दृष्टि भर है - एक अनुभूति है। काल-विशेष को आधुनिकता कहना ठीक नहीं है। काल - विशेष में जीवित रहनेवाला हर व्यक्ति या साहित्यकार आधुनिक नहीं है। आधुनिकता समसामयिक संदर्भों से जुड़ी हुई नयी जीवन दृष्टि है।"[२]

डॉ.शुक्ल जी ने आधुनिकता को समसामयिक से जोड देने का प्रयास किया है।

(९) देवराज पथिक --

"प्रत्येक काल और युग की अपनी निजता ही आधुनिकता के अर्थ ग्रहण-क्षेत्र में व्याप्त रही है। अर्थात् प्रत्येक युग की अपनी - अपनी आधुनिकता रही है, इसमें सन्देह नहीं। ... कल की आधुनिकता आज अतीत की प्रवंचना है और वर्तमान आधुनिकता कल की विडम्बना हो सकती है।"[३]

पथिक जी के अनुसार `आधुनिकता` हमेशा परिवर्तनशील रहती है।

---

१ `समीक्षा लोक` (पत्रिका) - सम्पादकीय - फरवरी १९७२।

२ `आँचलिकता से आधुनिकता बोध` - डॉ.भगवती प्रसाद शुक्ल - पृ.१३१।

३ `नयी कविता में राष्ट्रीय चेतना` - देवराज पथिक - पृ.३४८, ३५०।

(१०) डॉ.दंगल झाल्टे -

" वस्तुत: आधुनिकता वर्तमान के युगीन यथार्थ को सजग रूप में भोगने और उस भोग से जीवन और जगत के नए संदर्भ देखने तथा जीने की क्षमता है ।"[१]

डॉ.झाल्टे जी के अनुसार ' आधुनिकता ' युगीन यथार्थ को भोगने की क्षमता है ।

(११) डॉ.नरेन्द्र मोहन --

" इसे आप आधुनिक युग की खास मानसिकता,खास दृष्टि कह सकते हैं । खास इस माने में कि यह मध्यकालीन मानसिकता और दृष्टिकोण से अलग है क्योंकि इसके मूल में वैज्ञानिकता,टेक्नोलॉजी और औद्योगीकरण की संस्कृति है । इसीलिए आधुनिकता आधुनिक जिन्दगी के दबावों, आधुनिक आदमी की सोच और चिंतन, उसके अस्तित्व, उसकी द्वंद्व पूर्ण, प्रश्नाकुल और संघर्षशील मानसिकता से बना एक दृष्टिकोण है ।"[२]

डॉ.नरेन्द्र मोहन जी ने आधुनिकता को खास दृष्टि मानकर तत्कालीन युग में जुड़ाने वाले मानव मनोवृत्ति से जोड़ दिया है ।

(१२) डॉ.देवेश ठाकुर --

" आधुनिकता वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पृक्त एक सतत गतिशील प्रक्रिया है जो समकालीन परिप्रेक्ष्य में उपजी हुई नयी संवेदनाओं, नयी स्थितियों, विचार भूमियों और जीवन संदर्भों को व्यक्त करती हुई और उन्हें रचनात्मक अर्थ देती हुई प्रशस्त होती है ।"[३]

---

१ ' उपन्यास समीक्षा के नये प्रतिमान ' - डॉ.दंगल झाल्टे - पृ.११० ।

२ ' आधुनिकता के संदर्भ में हिंदी कहानी ' - डॉ.नरेन्द्र मोहन - पृ.१३ ।

३ ' साहित्य के मूल्य ' - डॉ.देवेश ठाकुर - पृ.९६ ।

डॉ.ठाकुर जी के अनुसार आधुनिकता एक सतत गतिशील प्रक्रिया होने के नाते उसे अपने समय से जुड़कर उससे साक्षात्कार करते हुए चलना है ।

इस तरह विभिन्न विद्वानों के ` आधुनिकता ` के बारे में मतमतांतर देखकर यह कह सकते हैं कि ` आधुनिकता ` को निश्चित परिभाषा में बाँधना मुश्किल है । आधुनिकता का प्रश्न अपने आप में बहुत उलझा हुआ है । फिर भी इतना तो कहा जा सकता है कि आधुनिकता जड़स्थिति न होकर निरंतर परिवर्तनशील विकास की स्थिति है ।

डॉ.साधना शाह ने ` आधुनिकता ` के सन्दर्भ में हिंदी के विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों से साक्षात्कार कर के उनके अभिप्राय पूछे हैं ।

आधुनिकता बोध से आपका क्या तात्पर्य है ?

(१) कमलेश्वर --

" आधुनिकता केवल एक प्रक्रिया है और प्रक्रिया के अलावा कुछ भी नहीं " । [१]

(२) राजेन्द्र यादव --

" आधुनिकता मेरी समझ में एक ऐसी दृष्टि है, जो धीरे-धीरे आपको उन पुराने, मूल्यों धाराओं से मुक्त होने की दिशा में प्रेरित करती है । जो प्रश्न आपके भीतर उठते हैं, उससे ही आप आधुनिकता का एक तरह से अनुमान लगा सकते हैं, आधुनिकता को समझ सकते हैं । " [२]

(३) दूधनाथ सिंह --

" आधुनिकता से मेरा तात्पर्य यह है कि जो चीज हमारी सामाजिक,

---

१ ` नई कहानी में आधुनिकता बोध ` - डॉ.साधना शाह - पृ.१२१ ।

२ ` नई कहानी में आधुनिकता बोध ` - डॉ.साधना शाह - पृ.१२७ ।

राजनीतिक, आर्थिक स्थितियों में हमारी अनुभूति और हमारा भावबोध बना रहा हो, यानि जो चीजें हमारे समाज, हमारी राजनीति और ऐतिहासिक परिस्थितियों से लगी हुई हों, जुड़ी हुई हों वही आधुनिकता हो सकती है।"[1]

(४) काशीनाथ सिंह --

"समाज को जो राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक शक्तियाँ, भारत के भविष्य के निर्माण में योग दे रही हैं, उन्हें मेरे ख्याल से आधुनिकता कहा जाना चाहिए।"[2]

(५) रवीन्द्र कालिया --

"मानव की पीडा यंत्रणा, संत्रास कारण शोषण मूलक व्यवस्था है न कि उसकी नियति या भाग्य .... इन ह्रासशील प्रवृत्तियों का विरोध ही आधुनिकता है।"[3]

(६) ममता कालिया --

"आधुनिकता को आप एक दृष्टि कह सकते हैं और जरूरी नहीं कि उस दृष्टि को पाने के लिए वह छठे या सातवें दशक में लिख रहा हो।"[4]

(७) जितेन्द्र भाटिया --

"मेरे विचार में आधुनिकता शब्द सिर्फ किसी विशिष्ट प्रकार की अभिव्यक्ति या स्टाईल का बोध नहीं देता है। आधुनिकता से कम से कम मैं यह समझाता हूँ कि हम उन सारे सम्बन्धों को अपने साथ समेटते हैं, जिनमें आज हम जी रहे हैं। वे तमाम राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दबाव इस शब्द के अन्तर्गत आते हैं, जिसमें आज का आदमी जी रहा है। इसलिए आधुनिक बोध को अपने समय

---

१ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ. साधना शाह - पृ.१३२।
२ - वही - पृ.१३९।
३ - वही - पृ.१४३।
४ - वही - पृ.१४८।

से जोड़कर ही पहचाना जा सकता है ।"[१]

(८) सतीश जमाली --

"अपने आसपास की सही चीजों को, अपने परिवेश की सच्चाइयों को यदि वह अपनी रचनाओं में सही रूप देता है, तो उसे हम आधुनिकता बोध कह सकते हैं ।"[२]

(९) गंगा प्रसाद विमल --

"आधुनिकता एक प्रकार का दृष्टिकोण है और यह दृष्टिकोण रेशनल या वैज्ञानिक दृष्टिकोण है । मैं उसे इस रूप में जोड़ता हूँ कि जो सामाजिक यथार्थ है, उसकी वैज्ञानिक पहचान आधुनिकता है । ... आधुनिकता बोध का अर्थ जीवन की उन अन्तर्धाराओं को समझना है, जो कि इस सारी परिस्थितियों के कारण उत्पन्न हुई हैं ।[३]

(१०) डॉ.भगवानदास वर्मा --

"आधुनिकता बोध की धारणा अपने आप में सामाजिक धारणा है । ....मैं यह कहूँगा कि कुछ कालिक तत्व होते हैं जो समय के साथ जुड़े हुए होते हैं । और कुछ परम्परा से चले आते प्रभावशाली तत्व होते हैं जो कभी समाप्त नहीं होते । अर्थात एक तरह की गत्यात्मकता और एक तरह के कालिक बोध के समन्वय से जो कोई तत्व बनता है उसे आधुनिकता बोध कहा जा सकता है ।"[४]

(११) अमरकांत --

"मेरे ख्याल से आधुनिकता बोध एक जीवन दृष्टि है ।"[५]

---

१ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ.साधना शाह - पृ.१५२ ।

२ - वही - पृ.१६४ ।

३ - वही - पृ.१६८ ।

४ - वही - पृ.१७५ ।

५ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ.साधना शाह - पृ.१८७ ।

(१२) विजय मोहन सिंह --

" आधुनिकता से तात्पर्य हैं - मॅच्यूअर होना, प्रौढ होना, रेशनल होना, आधुनिकता की सबसे बडी और सबसे पहली पहचान हैं । " [१]

(१३) रमेश उपाध्याय -

` आधुनिकता, मेरे विचार से एक काल-सापेक्ष धारणा हैं, इसलिए इसे ऐतिहासिक सन्दर्भ में ही समझा जा सकता हैं । इस धारणा का सम्बन्ध औद्योगीकरण के फलस्वरूप सामाजिक उत्पादन के साधनों और सम्बन्धों में हुए आधुनिकीकरण हैं । .... सामाजिक उत्पादन का तरीका बदल जाने के कारण समाज के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक जीवन में अनेक परिवर्तन हुए । आधुनिकता की धारणा इन्हीं परिवर्तनों से जुड़ी हुई हैं । " [२]

आधुनिकता को छठे दशक के आसपास से लगातार व्याख्यायित और स्पष्ट करने की कोशिश की जा रही हैं । ` अपने समय की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों के बीच जिस रचनाशील मानसिकता, अनुभूति और भावबोध का निर्माण होता हैं, उसी को मोटे तौर पर ` आधुनिकता ` की संज्ञा दी जा सकती हैं । ` [३]

आज से पचास-सौ वर्ष पहले हमारे लिए जो विचार और वस्तु आधुनिक थी उसे आज आधुनिक कहने में संकोच हो सकता हैं । लेकिन आज की ` आधुनिकता ` को हम उस काल की ` आधुनिकता ` की तुलना में ही 'आधुनिक' की संज्ञा दे सकते हैं । यही आधुनिकता का परम्परा से जुड़ना और साथ ही उससे मुक्त होना भी हैं । आधुनिकता एक प्रक्रिया होने के कारण एक से अधिक दौरों से गुजरी हैं और आज भी यह जारी हैं ।

---

१ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ. साधना शाह - पृ. १८४ ।

२ - वही - पृ. १९५ ।

३ साहित्य के मूल्य - डॉ. देवेश ठाकुर - पृ. ९० ।

डॉ.नरेन्द्र मोहन जी ने साहित्य में आधुनिकता के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है, ' साहित्य के संदर्भ में आधुनिकता पहले से सजी - संवरी और तराशी हुयी कोई मुकम्मिल चीज नहीं है जिसे लेखक रचना में रखता हो । यह उसकी रचना-दृष्टि और रचना-प्रक्रिया में घुली-मिली रहती है । वह इसे रचने के दौरान उपलब्ध करता है । .... जिन्दगी के वास्तविक संदर्भों की, सामाजिक और ऐतिहासिक शक्तियों और प्रक्रियाओं की उसे जितनी गहरी समझ और पहचान होगी, उसका आधुनिक बोध उतना ही खरा और प्रासंगिक होगा । '[१]

आधुनिकता का स्वरूप जो कल था, वह आज हो, जो आज है, वह कल भी हो यह दावा नहीं किया जा सकता । आधुनिकता एक बौध्दिक प्रक्रिया के साथ एक खोज है । प्रत्येक युग का समाज अपने समय की आधुनिक स्थिति एवं प्रवृत्ति से जूझता रहता है । प्रत्येक युग अपने युग में आधुनिक रहता है । ' आधुनिक ' शब्द काल विशेषण और नूतन दृष्टि (विचार) के अर्थ का द्योतक होता है ।'[२] युग और परिवेश के बदलाव से मनुष्य की संवेदनशीलता में बदलाव आता है । आधुनिक युग में वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों की भौतिक एवं बौध्दिक उपलब्धियों ने जीवन विषयक स्थापित मान्यताओं को तोड दिया है । वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक व्यवस्था के प्रति मानव की भावनाओं का स्वरूप बदल गया है । पचासोत्तर काल में जन्म-मृत्यु, पाप-पुण्य, योग्य तथा अयोग्य, नैतिक एवं अनैतिक के विषय में नया बोध विकसित हो रहा है ।

---

१ आधुनिकता के संदर्भ में हिंदी कहानी - डॉ.नरेन्द्र मोहन - पृ.१६ ।

२ बृहत हिन्दी पर्यायवाची शब्द-कोश - गोविन्द चातक - पृ.२२ ।

आधुनिकता : मूल्य या प्रक्रिया --

आधुनिकता की संकल्पना को एक और तरीके से समझाने का प्रयास किया गया है। वह है, आधुनिकता मूल्य है या प्रक्रिया है।

आधुनिकता को अगर एक निश्चित 'मूल्य' के रूप में लिया जाय तो वह समय विशेष से संबंध एक वस्तुनिष्ठ स्थिति बन जाएगी। तब आधुनिकता को निश्चित मानदंडों में बाँधना होगा।

इसके विपरीत अगर आधुनिकता को 'प्रक्रिया' मान लिया जाय तो प्रक्रिया में निरंतरता का बोध होने के कारण विशिष्ट समय को आधुनिकता से जोडना असंभव होगा।

आधुनिकता, प्रक्रिया या मूल्य पर विस्तार से विचार के लिए डॉ. साधना शाह ने जो प्रबुध्द साहित्यकारों से जानकारी ली है उसकी सहायता लेना आवश्यक होगा।

आधुनिकता : मूल्य या प्रक्रिया ?

(१) कमलेश्वर --

"आधुनिकता को मूल्य मानना यह एक बहुत बडी गलती होगी क्योंकि आधुनिकता मूल्य कभी नहीं हो सकता। आधुनिकता केवल प्रक्रिया है और प्रक्रिया के अलावा कुछ भी नहीं। .... यह एक निरन्तर परिवर्तित होनेवाली स्थिति है, क्योंकि आधुनिकता कहीं से आती नहीं है, कहीं जाती नहीं है।"[१]

(२) राजेन्द्र यादव --

"मूल्य और प्रक्रिया दोनों से अलग दृष्टि और बोध मानता हूँ। सबसे पहले दृष्टि और बोध मानता हूँ, बाद में वह प्रक्रिया भी हो सकती है।"[२]

---

१ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ. साधना शाह - पृ. १२१।

२ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ. साधना शाह - पृ. १३०।

(३) दूधनाथ सिंह --

"आधुनिकता मूल्य नहीं है, यह लम्बी प्रक्रिया है । प्रक्रिया इस तरह कि अगर स्थितियाँ और अपने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, व्यक्तिक परिस्थितियों और समस्याओं के प्रति लेखक सावधान और जागृत है, तो उसकी रचना अवश्य आधुनिक होगी और आधुनिक तभी होगी जब वह अपनी सम्पूर्ण परम्परा में एक कड़ी के रूप में जुड जाये । इसलिए वह एक प्रक्रिया है ।"[१]

(४) काशीनाथ सिंह --

"आधुनिकता को मैं प्रक्रिया के रूप में लेता हूँ ।"[२]

(५) रवीन्द्र कालिया --

"आधुनिकता को मैं मूल्य नहीं एक प्रक्रिया ही मानता हूँ और निरंतर विकासशील प्रक्रिया ।"[३]

(६) ममता कालिया --

"आधुनिकता को मैं इसलिये न मूल्य के रूप में स्वीकार करना चाहूँगी न प्रक्रिया के रूप में, वह एक दृष्टि है जो आँचलिक कथाकारों में भी हो सकती है, आधुनिक कथाकारों में भी हो सकती है और इससे पूर्ववर्ती कथाकारों में भी हो सकती है ।"[४]

(७) जितेन्द्र भाटिया --

"आधुनिकता को मैं मूल्य मानता हूँ और गौण रूप में प्रक्रिया को ले सकते है । आधुनिकता को मैं मूल्य मानता हूँ, परन्तु स्वतंत्र और असंबध्द मूल्य नहीं

---

१ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ. साधना शाह - पृ. १३३ ।
२ - वही - पृ. १४० ।
३ - वही - पृ. १४३ ।
४ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ. साधना शाह - पृ. १४८ ।

मानता, बल्कि अपने समय, अपने इतिहास और परंपरा से जुडा हुआ मूल्य मानता हूँ ।" [१]

(८) मणि मधुकर --

" आधुनिकता अपने आप में गत्यात्मक प्रक्रिया है, जो हमेशा संवेदना के साथ जुड़कर अपना अर्थ ग्रहण करती है ।" [२]

(९) डॉ. भगवानदास वर्मा --

" आधुनिकता बोध मेरे ख्याल से मूल्य की अपेक्षा प्रक्रिया अधिक है ।" [३]

(१०) विजय मोहन सिंह --

" आधुनिक मूल्य हो सकते है, आधुनिकता के मूल्य हो सकते है । आधुनिकता अपने आप में मूल्य नहीं, वह प्रक्रिया है ।" [४]

(११) मन्नू भंडारी --

" यह एक स्वत: सिध्द बात है कि आधुनिकता मूल्य नहीं है - एक दृष्टि है, जो निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया में गुजर कर ही सार्थक बनी रह सकती है ।" [५]

उपर्युक्त मतों में कहीं आधुनिकता को मूल्य तो कहीं प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है । कहीं इन दोनों को मिलाने की कोशिश भी की गई है । अत: आधुनिक्ता एक गतिशील प्रक्रिया है । जैसे ही यह प्रक्रिया स्थिरता के पास चली जाती है, वैसे ही उसकी आधुनिकता रुक सी जाती है । इसी लिए सजग कथाकार इस आधुनिकता की गतिशीलता को पकडने का प्रयास करता है ।

---

१ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ. साधना शाह - पृ. १५४ ।
२ - वही - पृ. १५८ ।
३ - वही - पृ. १७७ ।
४ - वही - पृ. १८४ ।
५ नई कहानी में आधुनिकता बोध - डॉ. साधना शाह - पृ. १९० ।

आधुनिकता की व्याप्ति --

आधुनिकता का अर्थ , परिभाषाएँ, एवं स्वरूप देखने के पश्चात् उसकी व्याप्ति देखना क्रमप्राप्त है । आधुनिकता अपनी नवीनता और विविधता के कारण प्रत्येक साहित्य में अपने संदर्भ से जुड़ी होती है । आधुनिकता का सम्बन्ध मानव जीवन से होने के कारण उसके विभिन्न संदर्भों का विवेचन किया जा रहा है ।

आधुनिकता और इतिहास बोध ---

आधुनिकता ऐतिहासिक काल से विकसित हुई है लेकिन उसमें ऐतिहासिक धारणा ह्रासशील है । आधुनिकता कोइतिहास से अलग नहीं किया जा सकता । मनुष्य अपने अतीत को वर्तमान में ढालकर वर्तमान को भविष्य के अनुकूल बनाकर, उसे सामाजिक व्यवस्था का रूप देता है और उसे आधुनिकता के नाम से अभिहित किया जाता है । "[१]

मनुष्य अतीत की अपेक्षा वर्तमान में अधिक जीना चाहता है । आधुनिकता धर्म और दर्शन से जुड़ा है, फिर भी आधुनिक मनुष्य वैज्ञानिक दृष्टि लिया हुआ है, इसी कारण वह ' देवता के स्थान पर ' पूर्ण मनुष्य ' की कल्पना[२] करता है ।

आधुनिकता और परम्परा --

परम्परा का अपना सही अर्थ है गतिमान तत्व । जिसमें निरंतर विकास की संभावना रहती है । आधुनिकता के साथ परम्परा को जोड़ा गया है । ' कुछ आलोचक और लेखक आधुनिकता को परम्परा से अलग करते हैं और कुछ आलोचक अविच्छिन्न मानते हैं ।[३]" जीवन में पुराने विचार नये सन्दर्भ में बदलते रहते हैं । " जब नये मूल्य पुराने मूल्यों से टकराते हैं तो नूतन या तीसरे मूल्य का जन्म होता है । तीसरे मूल्य का नाम ही आधुनिकता है ।[४]" अपने समय में पहले की

---

१ आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ.उर्मिला मिश्र - पृ.५ ।

२ -वही - पृ.५ ।

३ आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ.उर्मिला मिश्र पृ.६ ।

४ -वही- पृ.६ ।

परम्पराओं का निषेध करते हुए भी आधुनिकता परम्परा से कुछ ना कुछ ग्रहण करती ही हैं। आधुनिकता परम्परा का अंधानुकरण नहीं करती, परंतु परम्परा की अप्रत्यक्ष सहायता आधुनिकता को मिलती रहती हैं। परम्परा और आधुनिकता दोनों ही गतिशील हैं। परंतु आधुनिकता की गतिशीलता में ठहराव नहीं आता जो परम्परा में आता हैं। ` परंपरा में युग सम्मत परिवर्तन और संस्कार, पुराने और समय बाह्य पड गये मूल्यों का बहिष्कार और नये मूल्यों का सृजन, आधुनिकता की अनिवार्य शर्त है। "[१]

आधुनिकता और समकालीनता --

आधुनिकता को कुछ लोग समकालीनता या समसामयिकता से जोडते हैं। परंतु यह गलत हैं। ` सम-सामायिकता ` अंग्रेजी शब्द "Contemporary " (कन्टेम्पोरेरी) को कहते हैं जिसका सम्बन्ध ` समय ` से होता हैं। आधुनिक (Modern) का सम्बन्ध संवेदना, प्रवृत्ति या शैली से होता हैं। `
` समकालीनता और समसामयिक समयगत चेतना या बोध हैं, जब कि आधुनिकता का समय-संदर्भ होने के साथ-साथ प्रवृत्तिगत अर्थ भी हैं। आधुनिकता का एक अपना तुलनात्मक संदर्भ भी हैं, आधुनिकता अपने पूर्ववर्ती समय से पृथक अपना स्वरूप और अस्मिता कायम करती हैं। "[२]

समकालीन लिखा गया साहित्य आधुनिक बोध से युक्त हो यह आवश्यक नहीं। हिन्दी साहित्य में मैथिलीशरण गुप्त रचित ` भारत-भारती ` जैसी कृतियाँ सम-सामयिक कही जायेंगी, क्योंकि उनके काव्य में समय की छाप मिलती हैं। पर आधुनिकतावादी लेखक अतीत से जुडकर वर्तमान में रहकर भविष्य से जुड़ा रहता हैं।

---

१ समकालीन कहानी : युगबोध का संदर्भ - डॉ. पुष्पपालसिंह - पृ. ६।

२ समकालीन कहानी : युगबोध का संदर्भ - डॉ. पुष्पपालसिंह - पृ. ७।

आधुनिकता और विज्ञान का प्रभाव ---

आधुनिकीकरण उपकरणों के भरपूर प्रयोग द्वारा समाज को पूरी तरह विज्ञान के आश्रित बना देता है । इसके लिए वह औद्योगिक केन्द्र, तकनीकी विकास, नगर विद्युत, संचार माध्यम, शिक्षा और वैज्ञानिक उपकरणों का सहारा लेता है । सामाजिक जीवन में इस आधुनिकीकरण के प्रयोग बहुलता के कारण मनुष्य के क्रिया व्यवहार और संस्कारों में परिवर्तन कर देते हैं । फिर यही परिवर्तन अनुभव के रूप में साहित्य एवं कलाओं में अभिव्यक्त होने लगता है ।

आधुनिकीकरण की प्रक्रियाएँ - औद्योगीकरण और नागरीकरण, आधुनिकता बोध में सहायक होते हैं, परन्तु वे स्वयं आधुनिकता बोध नहीं हैं । आज का युग यान्त्रिकता का युग है । विज्ञान ने मनुष्य को श्रध्दा के स्थान पर विश्लेषण की दृष्टि दी है । वह आन्तरिक और बाह्य रूप से विज्ञान से प्रभावित हुआ है । विज्ञान ने भौगोलिक दूरियों को समाप्त कर, मनुष्य को पास-पास लाकर खडा कर दिया है लेकिन आत्मा आत्मा के तादात्म्य को समाप्त और छिन्न-भिन्न कर दिया है ।[१] आदमी - आदमी में अजनबीयत फैल गयी है । व्यक्तिगत विचार और समाज के प्रचलित विचार में टकराहट पैदा हो रही है । मनुष्य का जीवन विज्ञान से प्रभावित हो कर अनास्था के धरातल पर खड़ा होने लगा है । अर्थ के दबाव और वैज्ञानिक तर्क के कारण यथार्थ के धरातल पर सामाजिक सम्बन्धों के मानदण्ड टूटे और टूटते जा रहे हैं ।[२] मनुष्य धीरे धीरे अकेला और अकेला होता जा रहा है । इसी तरह साहित्य में अभिव्यक्त होनेवाली आधुनिकता समाज के जीवन बोध और सन्दर्भों से ही आती है ।

---

१ आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ. उर्मिला मिश्र - पृ.११ ।

२ आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ. उर्मिला मिश्र - पृ.१० ।

धर्म की विश्वासहीनता एवं विज्ञान का विकल्प --

मनुष्य ने धर्म की अनेक पुरानी मान्यताओं के प्रति शंका उठाकर अपनी आधुनिकता की दृष्टि से धर्मनिरपेक्षता का विकल्प ग्रहण करने की कोशिश की है। आधुनिकता का सबसे बडा संघर्ष धर्म से है। आज धर्म मानव की किसी समस्या का विवेकपूर्ण या विज्ञान सम्मत उत्तर नहीं दे पाता है। धर्म की उपयोगिता को अविश्वास, पुनर्परीक्षणपर आधारित उपयोगिता को परखने का मौका नहीं है। सब कुछ ईश्वर इच्छा है। गत पन्द्रह सौ वर्षों में धर्मानुगत आधारों की चिंतन चर्चा जितनी हुई है, उसकी तुलना में केवल सौ, पचास वर्षों में उससे कई जादा चर्चाएँ, शंकाएँ उसके विरोध में उठायी गई। आधुनिकता धर्म के विश्वासगत पहलूओं को तोडती है। आधुनिकता ने धर्म के अलौकिक एवं मानव शक्ति से परे सभी विषयों को लौकिक और मानवीय क्षमता के समीप ले जाने का प्रयास किया।

मार्क्स ने धर्म को अफीम की गोली कहा है और गलत दिशा में ले जानेवाली वस्तु कहा है। विज्ञान, शिक्षा और राजनीति ने मनुष्य को अधिकार के लिए झगडने की प्रेरणा उत्पन्न की है। आधुनिकता ने मनुष्य की धार्मिक वैचारिकता में परिवर्तन लाया है। इस सन्दर्भ में कमलेश्वर जी का कथन है कि 'धर्म अब गति देनेवाली शक्ति नहीं रह गया है। .... जीवन-पध्दति के मूल्यों को तय करने का काम धर्म अब नहीं करता और न हमारे जमाने के सवालों का जवाब देता है।'[१] आज का मनुष्य तर्क के आधारपर जिंदा है, आस्था पर नहीं। जीवन की समस्याओं का उत्तर धर्म नहीं दे पा रहा है। इसी कारण जीवन में विज्ञान ने धर्म का स्थान ले लिया है। अब धर्म का प्रभाव अन्तर्राष्ट्रीय पर उतना नहीं रहा जितना मध्यकाल में था। जीवन की व्यस्तता के कारण आदमी धार्मिक कार्य नहीं कर पा रहा। पवित्रता - अपवित्रता की धारणा समाप्त होती जा रही

8825 A

१ नई कहानी की भूमिका - कमलेश्वर - पृ.१६०।

हैं । .... धार्मिक रूढ़ियाँ धीरे-धीरे कम हुए हैं ।"[१]

सम्बन्धों का टूटना एवं बनना --

आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रिया ने समाज में परिवर्तन कर दिया है । परम्परा से चले आ रहे मानदण्ड, परिवार का स्वरूप और व्यक्ति के वैयक्तिक जीवन में भी परिवर्तन हुआ है । औद्योगीकरण एवं आधुनिकीकरण के कारण परिवारों का परम्परागत स्वरूप तेजी से टूट कर, अलग ' केन्द्रीय ' परिवारों में बदल रहा है । संयुक्त परिवार के कार्यों मे तब्दिली आयी है । एक परिवार मे आर्थिक दबावों के कारण व्यक्ति अकेलेपन के गर्त में जा चुका है । परिवार का टूटना, स्त्रियों के अधिकारों में सुधार, भौतिक आवश्यकताओं के कारण पति-पत्नी दोनों का नौकरी करना और उससे उत्पन्न तनाव की भयानक स्थिति यह सभी समकालीन आधुनिकता की देन हैं । परिवार में उपस्थिति का बोध, आत्मीयता, सहानुभूति नामक चीजें बेमानी रह गयी हैं । व्यक्ति का स्वयं को न जानना, बेगानापन, अजनबीपन के कारण नामहीन एवं व्यक्तित्वहीन स्थिति से गुजर रहा है । मधुर सम्बन्धों की जगह औपचारिकता ने ले ली । ' यान्त्रिक विकास के सन्दर्भ में व्यक्ति अपने घर में ही अपने को ' मेहमान ' की तरह अनुभव करता है ।'[२] मनुष्य के अंदर के अकेलेपन ने और बाहर के परिवेश ने जो स्थिति बनाई है वही आधुनिकता है । और इस आधुनिकता की अभिव्यक्ति ही नया साहित्य है ।

मनुष्य का आत्मपरायापन एवं आधुनिक संदर्भ ---

भीड़ में भी व्यक्ति अकेला है । आदमी अपनी निजता को खो बैठा है ।

---

१ आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ.उर्मिला मिश्र - पृ.१२ ।

२ आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ.उर्मिला मिश्र - पृ.१४ ।

आदमी अपनी इच्छा पूर्ति के लिए सार्वजनिक कुव्यवस्था, भ्रष्टाचार से टकराता है तभी उसमें निरन्तर अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति निर्माण होती है। सदैव संघर्ष की स्थिति उसे आत्म-निर्वासन में ला खड़ा कर देती है। व्यक्ति की इसी स्थिति के कारण वह सामाजिक कार्यों के प्रति उदासीन होता है।

' आत्म-निर्वासन की स्थिति हमारे समाज में किसकी है ? भारतीय समाज में पूँजीपति (संभ्रांत वर्ग), मध्यमवर्ग, निम्न मध्य वर्ग एवं निम्न-वर्ग आदिकई वर्ग है। एक तरफ सफल लोगों का आत्म-निर्वासन देखने को मिल रहा है। जो जीवन में निरंतर सफलता प्राप्त करते रहे है। उनकी बढ़ती हुई महत्वाकांक्षा की स्थिति और निरंतर सफलता ने उन्हें आत्म-निर्वासित बनाया है। दूसरी तरफ जीवन की निरंतर असफलता, बेकारी, गरीबी, बेरोजगारी ने जिन्हें बाहर-भीतर से पूरी तरह जर्जरित कर दिया है वे भी निर्वासित है। भारतीय सन्दर्भ में आत्म-निर्वासन एक तरह की असहायता का नाम है।'[१]

इन्हीं बातों को आधुनिकता ने अभिव्यक्ति दी है। इसके द्वारा लेखक व्यक्ति एवं समाज से जुड़ जाता है।

संत्रास या भय --

संत्रास अंग्रेजी शब्द ' Terror ' (टेरर) का अर्थ देता है। भारतीय एवं पश्चिमी संत्रास में अंतर है। पश्चिमी संत्रास वैज्ञानिक अतिवादिता के कारण उत्पन्न हुआ है। पर हमारे देश में भुखमरी, दिनदिन अभाव, बेरोजगारी, बढ़ती जन-संख्या, शिक्षा का अपर्याप्त प्रसार, सूखा, बाढ़, मंहगाई आदि के कारण उत्पन्न संत्रास है। संत्रास सामाजिक अवस्था की एक स्थिति है। ' अनुभव और विचार की टकराहट से संत्रास की रचना होती है जो अतार्किक और असम्बध्द क्रिया में बदल जाती है।'[२] व्यक्ति के विचार से सार्वजनिक विचारों का ताल मेल न बैठने के

---

१ आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ. उर्मिला मिश्र - पृ. १६।

२ आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ. उर्मिला मिश्र - पृ. २०।

कारण मनुष्य सामाजिक कार्यों ,तथा पारिवारिक रिश्तों से अलग जिन्दगी जी रहा हैं । इसी की भी अभिव्यक्ति आधुनिकता के अन्तर्गत होती हैं ।

अलगाव और आधुनिकता --

वैज्ञानिक प्रगति के कारण भौगोलिक दूरियाँ तो समाप्त हो जा रही हैं पर आदमी - आदमी से कटता जा रहा हैं । पाश्चात्य देशों की अपेक्षा भारत आर्थिक, राजनैतिक,सामाजिक रूप से अधिक पिछडा हुआ हैं । देश में आर्थिक संकट व्याप्त हैं । बढ़ती जनसंख्या और लूट-खसोट का भंयकर रूप दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा हैं । सुशिक्षीत बेरोजगारी का प्रमाण बढ़ रहा हैं । आज प्रत्येक क्षेत्र में ऊँची सिफारिश की जरूरत पड रही हैं । यहाँ तक की मन्दिर में ईश्वर दर्शन के लिए भी मूल्य देना पड़ रहा हैं । प्रजातन्त्र जनता की शोषाण का कारण बना हैं । देश में सामाजिक,धार्मिक,आर्थिक भेद-भाव एवं विषामता अपना पाशवी रूप धारण किए हुए हैं । स्वार्थी और आत्माहीन चेहरों से भरी देश-भक्ति जर्जर हो गयी हैं । तकनीकी व्यवस्था के कारण हाथों से काम छिन लिया गया हैं । तकनीकी के प्रभाव से मनुष्य के रहन-सहन,तौर-तरीके ... साहित्य,दर्शन, संगीत, चित्रकला सभी की आत्मा को परिवर्तित करके रख दिया हैं । इस प्रकार मशीनी सभ्यता ने मनुष्य के जीवन और जगत में विषामता और बिलगाव को उत्पन्न किया हैं ।[१] आधुनिकता इसके खिलाफ भी सजगता और मनुष्य की स्थिति को सम्हाने लगी हैं । इस सब से लड़ने का साहस आधुनिकता बडी दृढता के साथ दे रही हैं । इस स्थापित व्यवस्थाओं के प्रति सदेह और विकल्प की खोज में आशावादी चिनगारी आधुनिकता रही हैं । साहित्य में व्यक्त होनेवाली आधुनिकता समाज के जीवन बोध एवं उसके सांस्कृतिक सन्दर्भों की धरातल पर ही खड़ी हैं । आधुनिकता की चेतना साहित्य में कुछ विशिष्ट स्तरों पर मुख्य रूप से देखी जा सकती हैं ।

---

१ आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ.उर्मिला मिश्र - पृ.१८ ।

* (१) प्रत्येक वस्तु के रूप को भिन्न-भिन्न तात्विक रूपों में जानने की इच्छा । (२) वस्तुओं के प्रति पुनर्निर्माण का दृष्टिकोण । (३) जन सामान्य का प्रभाव । (४) अब और निष्क्रियता से पैदा हुई मानसिकता । और (५) गहरा अविश्वास ।*[१] आदि ।

इस तरह आधुनिकता की व्याप्ति मानव जीवन और उससे संबंधित वस्तुओंसे जुड़ कर रह गयी हैं । आधुनिकता किसी भी युग की विरोधी नहीं हैं ।

निष्कर्ष

आधुनिकता को हम किसी एक निश्चित और स्पष्ट परिभाषा में नहीं बांध सकते । आधुनिकता व्यक्ति के जीवन की वह स्थिति हैं जो उसे अपने समय की अच्छी-बुरी बातें सोचने समझाने की शक्ति प्रदान करती हैं । हिंदी साहित्य में आधुनिक युग सबसे अधिक विवेच्य युग रहा क्योंकि इसके अन्तर्गत जीवन से संबंधित अनेक मत,वाद एवं विचारधाराओं का उदय एवं प्रचलन हुआ । वैज्ञानिक सभ्यता के कारण आधुनिकीकरण मानव जीवन में अहम् बन गया हैं । आधुनिकीकरण आधुनिकता का लक्षण हैं तो व्यक्ति की दृष्टि एवं मानसिकता उसके प्रेरक हैं । जीवन मूल्यों में आधुनिकता का पुट आने से महानगर की जटिलता तथा परिवेश की तनावभरी स्थिति का प्रभाव आज के मानवपर पड़ा हैं । उसी स्थिति को भोगते हुए मनुष्य जीना चाहता हैं । व्यक्ति स्वतंत्रता की भावना, परिवेश के प्रति सर्तकता, स्थापित का विरोध, विज्ञान एक विकल्प एवं उसके परिणाम आदि आधुनिकता के अनिवार्य लक्षण हैं । जीवन के सरलीकरण की चाह में व्यक्ति ने शाश्वत जीवन-मूल्यों को बदलने की चेष्टा की हैं । इस का समुचित परिणाम साहित्यपर अनिवार्य रूप से पडा । फलत स्वरूप २० वी शतीका हिंदी साहित्य आधुनिकता से परिपूर्ण हैं ।

---

१ `मधुमती` - मई १९८७ - ले.पन्ना - पृ.६० ।